रविवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा। (तीन चरण वाले नक्षत्र त्रिपुष्कर, दो चरण वाले नक्षत्र द्विपुष्कर योग बनाते हैं।)

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां		शुभ और अशुभ योग		योगों के नाम		निषेध कार्य
1	अश्विनी							
2	भरणी							
3	कृत्तिका	2,7,12	5	शुभ	अशुभ	त्रिपुष्कर	हलाहल	
4	रोहिणी							
5	मृगशिरा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
6	आर्द्रा							
7	पुनर्वसु	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
8	पुष्य	5,7		शुभ		सुधा		
9	अश्लेषा							
10	मघा							
11	पूर्वाफाल्गुनी							
12	उत्तराफाल्गुनी	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
13	हस्त	5,7	5	शुभ	अशुभ	सुधा	मधुसर्पिश	
14	चित्रा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
15	स्वाती							
16	विशाखा	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
17	अनुराधा							
18	ज्येष्ठा							
19	मूला	5,7		शुभ		सुधा		
20	पूर्वाषाढ़ा							
21	उत्तराषाढ़ा	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
22	अभिजित							
23	श्रवण							

24	धनिष्ठा	2,7,12	शुभ	द्विपुष्कर	
25	शतभिषा				
26	पूर्वा भाद्रपद	2,7,12	शुभ	त्रिपुष्कर	
27	उत्तरा भाद्रपद				
28	रेवती				

सोमवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	अश्विनी				
2	भरणी				
3	कृत्तिका				
4	रोहिणी				
5	मृगशिरा	5,7 | 6	शुभ | अशुभ	सुधा | मधुसर्पिश	
6	आर्द्रा				
7	पुनर्वसु				
8	पुष्य				
9	अश्लेषा				
10	मघा				
11	पूर्वाफाल्गुनी				
12	उत्तराफाल्गुनी				
13	हस्त				
14	चित्रा	2	अशुभ	हलाहल	
15	स्वाती	5,7	शुभ	सुधा	
16	विशाखा				
17	अनुराधा				

18	ज्येष्ठा				
19	मूला				
20	पूर्वाषाढ़ा				
21	उत्तराषाढ़ा				
22	अभिजित				
23	श्रवण	5,7	शुभ	सुधा	
24	धनिष्ठा				
25	शतभिषा				
26	पूर्वा भाद्रपद				
27	उत्तरा भाद्रपद				
28	रेवती				

मंगलवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां		शुभ और अशुभ योग		योगों के नाम		निषेध कार्य
1	अश्विनी	5,7	7	शुभ	अशुभ	सुधा	मधुसर्पिश	
2	भरणी							
3	कृत्तिका	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
4	रोहिणी	5,7	15	शुभ	अशुभ	सुधा	हलाहल	
5	मृगशिरा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
6	आर्द्रा							
7	पुनर्वसु	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
8	पुष्य							
9	अश्लेषा							
10	मघा							
11	पूर्वाफाल्गुनी							

12	उत्तराफाल्गुनी	5,7	2,7,12	शुभ	शुभ	सुधा	त्रिपुष्कर	
13	हस्त							
14	चित्रा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
15	स्वाती							
16	विशाखा	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
17	अनुराधा							
18	ज्येष्ठा							
19	मूला							
20	पूर्वाषाढ़ा							
21	उत्तराषाढ़ा	5,7,	2,7,12	शुभ	शुभ	सुधा	त्रिपुष्कर	
22	अभिजित							
23	श्रवण							
24	धनिष्ठा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
25	शतभिषा							
26	पूर्वा भाद्रपद	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
27	उत्तरा भाद्रपद	5,7		शुभ		सुधा		
28	रेवती							

बुधवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	अश्विनी	5,7	शुभ	सुधा	
2	भरणी	7	अशुभ	हलाहल	
3	कृत्तिका				
4	रोहिणी				
5	मृगशिरा				

6	आर्द्रा				
7	पुनर्वसु				
8	पुष्य				
9	अश्लेषा				
10	मघा				
11	पूर्वाफाल्गुनी	5,7	शुभ	सुधा	
12	उत्तराफाल्गुनी				
13	हस्त				
14	चित्रा				
15	स्वाती				
16	विशाखा				
17	अनुराधा	8	अशुभ	मधुसर्पिश	
18	ज्येष्ठा				
19	मूला				
20	पूर्वाषाढ़ा	5,7	शुभ	सुधा	
21	उत्तराषाढ़ा				
22	अभिजित				
23	श्रवण				
24	धनिष्ठा				
25	शतभिषा				
26	पूर्वा भाद्रपद	5,7	शुभ	सुधा	
27	उत्तरा भाद्रपद				
28	रेवती				

बृहस्पतिवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	अश्विनी				
2	भरणी				
3	कृत्तिका				
4	रोहिणी				
5	मृगशिरा				
6	आर्द्रा				
7	पुनर्वसु	13	शुभ	सुधा	
8	पुष्य	13 9	शुभ अशुभ	सुधा मधुसर्पिश	
9	अश्लेषा				
10	मघा				
11	पूर्वाफाल्गुनी				
12	उत्तराफाल्गुनी				
13	हस्त				
14	चित्रा				
15	स्वाती				
16	विशाखा				
17	अनुराधा	13	अशुभ	हलाहल	
18	ज्येष्ठा				
19	मूला				
20	पूर्वाषाढ़ा				
21	उत्तराषाढ़ा				
22	अभिजित				
23	श्रवण				
24	धनिष्ठा				
25	शतभिषा				
26	पूर्वा भाद्रपद				
27	उत्तरा भाद्रपद				
28	रेवती	13	शुभ	सुधा	

शुक्रवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	अश्विनी				
2	भरणी				
3	कृत्तिका				
4	रोहिणी				
5	मृगशिरा				
6	आर्द्रा				
7	पुनर्वसु				
8	पुष्य				
9	अश्लेषा				
10	मघा				
11	पूर्वाफाल्गुनी				
12	उत्तराफाल्गुनी	1,6,11	शुभ	सुधा	
13	हस्त				
14	चित्रा				
15	स्वाती	1,6,11	शुभ	सुधा	
16	विशाखा				
17	अनुराधा				
18	ज्येष्ठा				
19	मूला				
20	पूर्वाषाढ़ा				
21	उत्तराषाढ़ा				
22	अभिजित				
23	श्रवण	6	अशुभ	हलाहल	

24	धनिष्ठा				
25	शतभिषा	1,6,11	शुभ	सुधा	
26	पूर्वा भाद्रपद				
27	उत्तरा भाद्रपद				
28	रेवती	10	अशुभ	मधुसर्पिश	

शनिवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	अश्विनी				
2	भरणी				
3	कृत्तिका	2,7,12	शुभ	त्रिपुष्कर	
4	रोहिणी	2,7,12 | 11	शुभ | अशुभ	सुधा | मधुसर्पिश	
5	मृगशिरा	2,7,12	शुभ	द्विपुष्कर	
6	आर्द्रा				
7	पुनर्वसु	2,7,12	शुभ	त्रिपुष्कर	
8	पुष्य				
9	अश्लेषा				
10	मघा				
11	पूर्वाफाल्गुनी				
12	उत्तराफाल्गुनी	2,7,12	शुभ	त्रिपुष्कर	
13	हस्त				
14	चित्रा	2,7,12	शुभ	द्विपुष्कर	
15	स्वाती	2,7,12	शुभ	सुधा	
16	विशाखा	2,7,12	शुभ	त्रिपुष्कर	
17	अनुराधा				
18	ज्येष्ठा				
19	मूला				

20	पूर्वाषाढ़ा				
21	उत्तराषाढ़ा	2,7,12	शुभ	त्रिपुष्कर	
22	अभिजित				
23	श्रवण				
24	धनिष्ठा	2,7,12	शुभ	सुधा, द्विपुष्कर	
25	शतभिषा				
26	पूर्वा भाद्रपद	2,7,12	शुभ	त्रिपुष्कर	
27	उत्तरा भाद्रपद				
28	रेवती	8	अशुभ	हलाहल	

योग

मुहूर्त को प्रभावित करने वाले नैसर्गिक योग और उनकी साधारण जानकारी शुभ-अशुभ और त्याज्य समय के आधार पर निम्न प्रकार से है।

क्रम संख्या	योगों के नाम	योगों के स्वामी	शुभ और अशुभ	आरंभिक त्याज्य घटियां (मिनट)
1	विष्कुम्भ	यम	अशुभ	3 घटी (72 मिनट)
2	प्रीति	चन्द्रमा	शुभ	
3	आयुष्मान	विष्णु	शुभ	
4	सौभाग्य	ब्रह्मा	शुभ	
5	शोभन	बृहस्पति	शुभ	
6	अतिगण्ड़	चन्द्रमा	अशुभ	6 घटी (144 मिनट)
7	सुकर्मा	इन्द्र	शुभ	
8	घृति	जल	शुभ	
9	शूल	सर्प	अशुभ	5 घटी (120 मिनट)
10	गण्ड़	अग्नि	अशुभ	6 घटी (144 मिनट)
11	वृद्धि	सूर्य	शुभ	
12	ध्रुव	भूमि	शुभ	

13	व्याघात	वायु	अशुभ	9 घटी (216 मिनट)
14	हर्षण	भग	शुभ	
15	वज्र	वरूण	अशुभ	3 घटी (72 मिनट)
16	सिद्धि	गणेश	शुभ	
17	व्यतीपात	रूद्र	अशुभ	पूर्ण अशुभ
18	वरीयान	कुबेर	शुभ	
19	परिघ	विश्वकर्मा	अशुभ	आधा भाग
20	शिव	मित्र	शुभ	
21	सिद्धि	कार्तिकेय	शुभ	
22	साध्य	सावित्री	शुभ	
23	शुभ	लक्ष्मी	शुभ	
24	शुक्ल	लक्ष्मी	शुभ	
25	ब्रह्म	अश्विनी कुमार	शुभ	
26	इन्द्र	पितर	शुभ	
27	वैधृति	दिति	अशुभ	पूर्ण अशुभ

शुद्ध योगः- वे योग जो एक ही सूर्योदय को छू पाते हैं, शुद्ध योग कहलाते हैं।

क्षय योगः- वे योग जो एक भी सूर्योदय को नही छू पाते हैं, क्षय योग कहलाते हैं।

वृद्धि योगः- वे योग जो दो सूर्योदय को छू पाते हैं। वृद्धियोग कहलाते हैं।

आवश्यक कार्य है और अनुकूल योग न मिल रहा हो तो स्वर्ण दान करके कार्य किया जा सकता है।

करण

एक तिथि के आधे भाग को एक करण कहते हैं यानि एक तिथि में दो करण होते हैं। एक चन्द्रमास में सात चर संज्ञक करण (बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि) आठ बार अपने आपको दुहराते हैं, जिससे इनकी संख्या 56 हो जाती

है, जबकि चार स्थिर संज्ञक करण (शकुनि, चतुष्पाद, नाग और किंस्तुधन) एक ही बार आते हैं। इस तरह एक चन्द्रमास में कुल 60 करण हो जाते हैं। जिनमे चर करणों में विष्टि को छोड़कर (**जो भद्रा के नाम से प्रसिद्ध है**) लगभग शुभ है और स्थिर चारों करण (पितृ कार्यों को छोड़कर) लगभग अशुभ हैं।

सभी 60 करण, तिथियों के अनुसार एक चन्द्रमास (कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष) में निम्न प्रकार से आते हैं।

कृष्ण पक्ष

तिथि का पूर्वार्ध (प्रथम भाग)				तिथि का उत्तरार्ध (द्वितीय भाग)		
तिथियां	करण	स्वामी	शुभ-अशुभ	करण	स्वामी	शुभ-अशुभ
1	बालव	ब्रह्मा	शुभ	कौलव	मित्र	शुभ
2	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ	गर	भूमि	शुभ
3	वणिज	लक्ष्मी	शुभ	**विष्टि**	**यम**	**अशुभ**
4	बव	इन्द्र	शुभ	बलव	ब्रह्मा	शुभ
5	कौलव	मित्र	शुभ	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ
6	गर	भूमि	शुभ	वणिज	लक्ष्मी	शुभ
7	**विष्टि**	**यम**	**अशुभ**	बव	इन्द्र	शुभ
8	बालव	ब्रह्मा	शुभ	कौलव	मित्र	शुभ
9	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ	गर	भूमि	शुभ
10	वणिज	लक्ष्मी	शुभ	**विष्टि**	**यम**	**अशुभ**
11	बव	इन्द्र	शुभ	बलव	ब्रह्मा	शुभ
12	कौलव	मित्र	शुभ	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ
13	गर	भूमि	शुभ	वणिज	लक्ष्मी	शुभ
14	**विष्टि**	**यम**	**अशुभ**	**शकुनि**	**कलि**	**अशुभ**
अमावस्या	**चतुष्पाद**	**रूद्र**	**अशुभ**	**नाग**	**सर्प**	**अशुभ**

शुक्ल पक्ष

	तिथि का पूर्वार्ध (प्रथम भाग)			तिथि का उत्तरार्ध (द्वितीय भाग)		
तिथियां	करण	स्वामी	शुभ-अशुभ	करण	स्वामी	शुभ-अशुभ
1	किंस्तुधन	मरूत	अशुभ	बव	इन्द्र	शुभ
2	बालव	ब्रह्मा	शुभ	कौलव	मित्र	शुभ
3	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ	गर	भूमि	शुभ
4	वणिज	लक्ष्मी	शुभ	विष्टि	यम	अशुभ
5	बव	इन्द्र	शुभ	बलव	ब्रह्मा	शुभ
6	कौलव	मित्र	शुभ	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ
7	गर	भूमि	शुभ	वणिज	लक्ष्मी	शुभ
8	विष्टि	यम	अशुभ	बव	इन्द्र	शुभ
9	बालव	ब्रह्मा	शुभ	कौलव	मित्र	शुभ
10	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ	गर	भूमि	शुभ
11	वणिज	लक्ष्मी	शुभ	विष्टि	यम	अशुभ
12	बव	इन्द्र	शुभ	बलव	ब्रह्मा	शुभ
13	कौलव	मित्र	शुभ	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ
14	गर	भूमि	शुभ	वणिज	लक्ष्मी	शुभ
पूर्णिमा	विष्टि	यम	अशुभ	बव	इन्द्र	शुभ

मुहूर्त को निकालते समय यदि भद्रा (विष्टि करण) पर विचार नही किया गया, तो भद्रा कार्य की असफलता के अनुपात को प्रभावित कर सकता है, क्योंकि भद्रा का विघ्नकारक प्रभाव कार्य को प्रभावित करता है। भद्रा का बुरा असर पृथ्वी पर तभी पड़ता है जब चन्द्रमा का गोचर 4,5,11 और 12वीं राशि में हो अन्यथा नही, क्योंकि यदि जब चन्द्रमा का गोचर 6,7,9 और 10वीं राशि में हो तो भद्रा का वास पाताल लोक में, और यदि चन्द्रमा का गोचर 1,2,3 और 8वीं राशि में हो तो भद्रा का वास स्वर्ग लोक में होता है।

यदि संभव हो तो भद्रा जिस दिशा में हो उस दिशा की यात्रा न करें। भद्रा की दिशा तिथियों (दोनो पक्षों की) पर निर्भर करती है।

दोनो पक्षों की तिथियां	**3**	**4**	**7**	**8**	**10**	**11**	**14**	**15**
भद्रा की दिशा	ईशान N/E	पश्चिम W	दक्षिण S	आग्नेय S/E	वायव्य N/W	उत्तर N	पूर्व E	नैऋत्य S/W

शुक्ल पक्ष की भद्रा को सर्पिणी (मुख में विष) और कृष्ण पक्ष की भद्रा को वृश्चिकी (पूंछ में विष) कहा जाता है। शुक्ल पक्ष में दिन की भद्रा सर्पिणी और रात में वृश्चिकी होती है जबकि कृष्ण पक्ष में दिन की भद्रा वृश्चिकी और रात की भद्रा सर्पिणी होती है। यहां पर सर्पिणी का अर्थ है मुख में विष और वृश्चिकी का अर्थ है पूंछ में विष, इसलिए कार्य अति आवश्यक हो तो भद्रा के बीच में करना चाहिए। भद्रा लगभग 12 घण्टे की होती है। शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा और अष्टमी व कृष्ण पक्ष की सप्तमी और चतुर्दशी तिथि के पूर्वार्ध (पहला आधा भाग) में भद्रा होती है जबकि शुक्ल पक्ष की चतुर्थी और एकादशी व कृष्णपक्ष की तृतीया और दशमी तिथि के उत्तरार्ध (अन्तिम आधा भाग) में भद्रा होती है। इसलिए कार्य यदि अति आवश्यक हो तो परिहार (भगवान शिव की पूजा आदि) के बाद भद्रा के मध्य में किया जा सकता है, **लेकिन शुक्ल पक्ष की भद्रा का आंरभिक समय और कृष्ण पक्ष की भद्रा का अंतिम समय विशेष रूप से त्यागना चाहिए।** यज्ञोपवीत, नवीन गृह आंरभ या प्रवेश, यात्रा और मांगलिक कार्य आदि भद्रा में न करें, जबकि भद्रा में दुर्गा पूजा की जा सकती है।

आवश्यक कार्य हो और विष्टि (भद्रा) करण भूलोक की हो तो अन्न (धान्य) दान करके कार्य किया जा सकता है।

1. लग्न शुद्धि

किसी विशेष घटना के घटते समय उस क्षेत्र के पूर्वी क्षितिज पर उदय होने वाली राशि को उस घटना का लग्न कहते हैं। लग्न शुद्धि को पंचांग के सभी अंगों (तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण) से अधिक महत्व दिया गया है क्योंकि किसी कार्य के मुहूर्त में तिथि, नक्षत्र आदि शरीर हैं, चन्द्रमा मन है तो लग्न उस कार्य का प्राण है।

लग्नशुद्धि के लिए निम्न विचारणीय तथ्य।

1. जन्म लग्न और चन्द्र लग्न से आठवीं राशि का लग्न न हो।
2. लग्न से अष्टम और द्वादश भावों में कोई ग्रह न हों।
3. लग्न के केन्द्र और त्रिकोण में अधिक से अधिक शुभ ग्रह हों।
4. लग्न भाव पाप कर्तरी योग में न हो।
5. लग्न से ग्यारहवें भाव में कोई भी ग्रह (शुभ या अशुभ) होना चाहिए। यदि शुभ मिले तो अच्छा है।
6. लग्न से तीसरे और छठवें भाव में पाप ग्रह हों।
7. कार्य की प्रकृति (चर, स्थिर और द्विस्वभाव) के अनुरूप लग्न यदि शीर्षोदय (3,5,6,7,8,11) भी हो तो सोने पर सुहागा समझना चाहिए।
8. लग्न और लग्नेश का सम्बंध नैसर्गिक शुभ ग्रहों से हो न कि नैसर्गिक अशुभ, वक्री, अस्त, नीच और अतिचारी से।
9. त्रिषड़ाय (3,6,11) भाव में पापी लग्नेश का पापत्व नष्ट हो जाता है।
10. जन्म लग्न या चन्द्र राशि से 3,6,10 या 11वीं राशि का लग्न शुभ ग्रहों के प्रभाव में हो, 8 और 12वें स्थान पर कोई ग्रह न हो, और चन्द्रमा लग्न से 3,6,10 या 11वें स्थान पर हों तो सभी कार्यों के लिए लग्न शुद्धि उत्तम है।
11. कार्य में सफलता के लिए **शून्य लग्न** का प्रयोग न हो जैसेः- प्रतिपदा (1) तिथि के दिन तुला लग्न और मकर लग्न शून्य लग्न होते हैं। ठीक इसी प्रकार से तृतीया (3) में सिंह और मकर, पंचमी (5) में मिथुन और कन्या, सप्तमी (7) में धनु और कर्क, नवमी (9) में कर्क और सिंह, एकादशी (11) में धनु और मीन, त्रयोदशी (13) में वृष और मीन लग्न शून्य लग्न होते हैं।
12. जातक की जन्म पत्रिका के सर्वाष्टक में अधिक बिन्दु वाली राशि वाला लग्न भी कार्य की सफलता में सहायक हो सकता है।
13. लग्न शुद्धि के साथ चन्द्र लग्न और D-9 पर भी विचार करना चाहिए।

जन्ममास, जन्मतिथि, पितृ श्राद्धदिन, अधिकमास, क्षयमास, शुक्र और गुरू अस्त अनेकों शुभ कार्य के लिए विचारणीय हैं। (मंगल, शनि और गुरू सर्वदा पश्चिम मे

अस्त और पूर्व मे उदित होते हैं जबकि बुध और शुक्र, दोनों दिशाओं में अस्त और उदित होते रहते हैं।)

खरमास (सूर्य, धुन या मीन राशि में) सिंहस्थ गुरू और मकरस्थ गुरू भी अनेंकों शुभ कार्यों के लिए विचारणीय हैं। गुरू सिंह राशि और सिंह के नवांश में हो तो अशुभ सूचक है। जबकि गुरू केवल मकर के पहले नवांश में हो तो शुभ कार्य न करें, पर अन्य नवांशों में शुभ कार्य किया जा सकता है।

विशेष

सूर्य राशि भेद, अंश भेद, देश भेद और दान आदि परिहारों को प्रयोग में लाकर सिंहस्थ गुरू और मकरस्थ गुरू में भी कई शुभ कार्य किये जा सकते हैं।

वर्तमान दिन से शनिवार तक की संख्या को दुगना कर दें तो प्राप्त संख्या वाला मुहूर्त कुलिक बनता है, इसी प्रकार मंगलवार से कण्टक, बुधवार से कालवेला और गुरूवार से यमघण्ट मुहूर्त बनता है जो प्रत्येक शुभ कार्य के लिए त्याज्य है। कुल मिलाकर 30 मुहूर्त होते हैं। 15 मुहूर्त दिन (सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय) के होते हैं। और 15 मुहूर्त रात्रि (सूर्यास्त से सूर्योदय तक का समय) के होते हैं। दिन के 15 बराबर भाग कर दिये जाएं, तो प्राप्त भागफल से पहले मुहूर्त का समय प्राप्त किया जा सकता है और उसके बाद अगले अन्य मुहूर्त का समय चलता रहता है। दिन के मुहूर्त मे 8वां मुहूर्त ब्रह्म मुहूर्त कहलाता है, जिसका स्वामी अभिजित होता है, जो सभी कार्यों के लिए शुभ माना जाता है। दिन के मुहूर्त और उनके स्वामी निम्न प्रकार से हैं।

क्रम संख्या	मुहूर्त के नाम	मुहूर्त के स्वामी	शुभ/अशुभ	शुभ कार्य और यात्रा वार के साथ इंगित मुहूर्त में वर्जित हैं।
1	शिव	आर्द्रा	अशुभ	शनिवार
2	सर्प (अशुभ)	अश्लेषा	अशुभ	शनिवार
3	मित्र	अनुराधा	शुभ	
4	पित्तर	मघा	अशुभ	मंगलवार/शुक्रवार
5	वसु	धनिष्ठा	सम	

6	जल	पूर्वाषाढ़ा	शुभ	गुरूवार
7	विश्वेदेवा	उत्तराषाढ़ा	सम	मंगलवार
8	ब्रह्मा	अभिजित	शुभ	बुधवार
9	विधाता	रोहिणी	शुभ	सोमवार/शुक्रवार
10	इन्द्र	ज्येष्ठा	सम	
11	इन्द्राग्नि	विशाखा	अशुभ	
12	राक्षस	मूल	अशुभ	सोमवार/गुरूवार
13	वरूण	शतभिषा	शुभ	
14	अर्यमा	उत्तराफाल्गुनी	सम	रविवार
15	भग (अशुभ)	पूर्वाफाल्गुनी	अशुभ	

रात्रि के मुहूर्त की गणना भी दिन के मुहूर्त की तरह ही की जाती है। जिनके नाम और स्वामी निम्न प्रकार से हैं।

क्रम संख्या	मुहूर्त के नाम	मुहूर्त के स्वामी	शुभ/अशुभ	शुभ कार्य और यात्रा वार के साथ इंगित मुहूर्त में वर्जित हैं।
1	शिव	आर्द्रा	अशुभ	शनिवार
2	अजपाद	पूर्वाभाद्रपद	अशुभ	
3	अहिर्बुन्धन्य	उत्तराभाद्रपद	सम	शुक्रवार
4	पूषा	रेवती	सम	
5	अश्विनी कुमार	अश्विनी	सम	गुरूवार
6	यम (अशुभ)	भरणी	सम	
7	अग्नि (हवन)	कृत्तिका	अशुभ	मंगलवार/बुधवार
8	ब्रह्मा	रोहिणी	अशुभ	सोमवार/शुक्रवार
9	चन्द्र	मृगशिरा	शुभ	मंगलवार
10	अदिति	पुनर्वसु	शुभ	
11	बृहस्पति (जीव)	पुष्य	शुभ	सोमवार
12	विष्णु	श्रवण	शुभ	
13	सूर्य (अर्क)	हस्त	शुभ	रविवार
14	विश्वकर्मा	चित्रा	सम	

15	पवन	स्वाती	सम	शनिवार

सूर्य संक्रान्ति, वृद्धि योग और हस्त नक्षत्र के दिन ऋण (कर्ज़) नही लेना चाहिए।